ॐ
अलख

श्री रूपभवानी अलखेश्वरी अष्टोत्तरशत नामावली

श्री माता रूप भवानी

ज्येष्ठ पूर्णमासी
1677 ई.
(आविर्भाव दिवस)

माघ कृष्णपक्ष सप्तमी
1777 ई.
(निर्वाण दिवस)

रचयिता पं. चमन लाल राज़दान
संकल्पनात्मक सहयोगी पं. अर्जुनदेव वष्ण, पं. राज नाथ धर

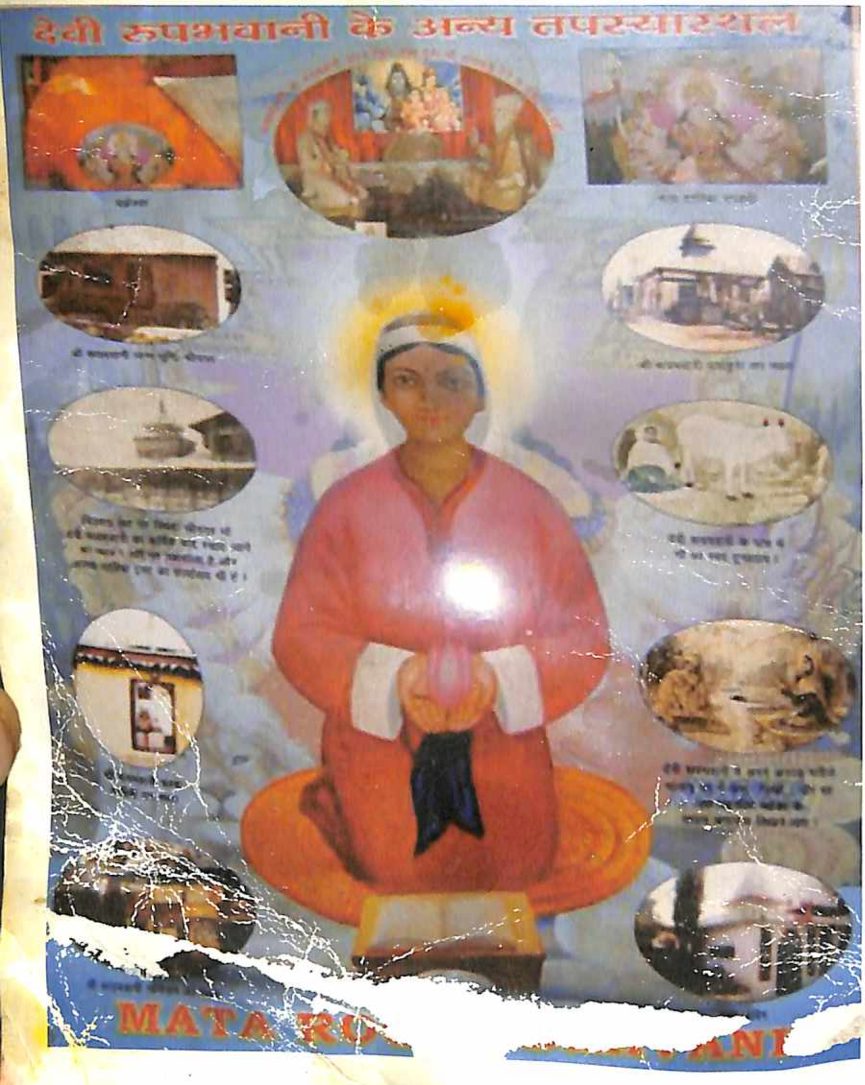
देवी रूपभवानी के अन्य तपस्यास्थल

What ALAKH means

The Shaktiwad of Kashmir adores ShriSharika as Mahamaya—the Divine Mother. She manifests as '*Alakh*' – the Purusha aspect and '*Ishvari*' –the Prakriti aspect. Thus Reality is a concrete unity in duality, which has been taught by Mata Roop Bhawani in her '*Nirvana Dashkam*' and '*Antar Drishti*'. She lays stress on Samadhi which is the union of Shiva and Shakti.

अलखा Alakh is the primal source in understanding the Triadic philosophy of manifestation.

अ-A is the *ISHVAR* Tattva and the first vibration of the Vedic Pranava ॐ -*Aum*'. अ-A Symbolizes the Vaishnavi excellence. It is the spirit of sustenance.

ल- La is the *PRITHVI* Tattva and symbolizes the physical manifestation of the universe. It is the basis of Yoga----- and is the body and its vital consciousness.

ख- Kha is the ethereal consciousness. It is the *AKASH* Tattva and known as the Space principal of extension which is the eternal matrix of Spirit.

[illegible] is the Supreme word [illegible] *SHA*[illegible]-*BRAHMA*[illegible].

--Dr Chaman Lal Raina

श्री रूपभवानी अलखेश्वरी
अष्टोत्तरशत नामावली

कृपया ध्यान रखें :

आप रूपभवानी अलखेश्वरी अष्टोत्तरशत नामावली की पूजा समय या स्थिति के अनुसार तीन प्रकार से कर सकते हैं, पहला होम (हवन) से, दूसरा पुष्पार्चन और तीसरा केवल पाठ मात्र से। यदि होम (हवन) करने का मन बनता है, तो उसमें आहुति के लिए घी तथा अग्नहोत्री (अग्नवतर) का होना आवश्यक है। इसी प्रकार पुष्पार्चन के लिए फूल तथा फूलों की कुछ मालाओं का प्रयोग करना पडेगा। यदि आप होम (हवन) कर रहे हैं तो आप प्रत्येक मन्त्र उच्चारण के अन्त में आहुति डालते हुए 'स्वाहा' पढ़ें अन्यथा पुष्पार्चन या पाठ के समय प्रत्येक मन्त्र के साथ अन्त में 'नमो नमः' पढ़ें जैसे 'ॐ श्री रूपभवानी माता शारिका अंश रूप।

ॐ श्री गणेशाय नमः   ॐ नमो भवान्यै

विनियोग करें:

ॐ अस्य श्री रूपभवानी अलखेश्वरी अष्टोत्तरशत नामावली अलखेश्वरी शक्त्यै स्वच्छन्दः माता रो'प द्यद तपस्विन्यै आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जित पापनिवारणार्थ श्री शारिका रूपायै प्रीत्यर्थे होमे/पुष्पाचर्ने/ पाठे विनियोगः।

अब न्यास करें:

अथ करन्यासः

ॐ अभ्यास प्रियायै अङ्गुष्ठाभ्यां नमः
ॐ ज्ञान प्रदायै त[illegible]भ्या नमः
ॐ शुद्धविद्यायै मध्यमाभ्यां नमः
ॐ शक्ति रूपायै अनामिकाभ्यां नमः
ॐ इष्टदेव्यै कनिष्ठिकाभ्यां नमः
[illegible]मुक्त्यै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः

[illegible]upreme [illegible] [illegible]IA[illegible]

--Dr Chaman Lal Raina

अथ षड न्यास:

ॐ अभ्यास प्रियायै हृदयाय नम:
ॐ ज्ञान प्रदायै शिरसे स्वाहा
ॐ शुद्धविद्यायै शिखायै वौषट्
ॐ शक्ति रूपायै कवचायहुम्
ॐ इष्टदेव्यै नेत्राभ्यां वौषट्
ॐ विमुक्त्यै अस्त्राय फट्

अब ध्यान करें:

अथ ध्यानम

आविर्भूता जनकतपसा शारिका अंशरूपा।
ध्वान्तं भित्त्वा सकलजगतो यागतासीत्समक्षम।
भक्तानाञ्च प्रवरसुखदामागतानां समीपे।
वन्दे नित्यं विकसितमुखीं रूपनाम्नीं भवानीम।।

[illegible] सर्व. [illegible] थ विचार्यम्।
[illegible] री।
[illegible] परमगती।।

तद् रूपमयी तत्परमगती स्थानी प्रवाही।
गति गट पूरनी छ्वदा देह तृपितम्।
समर्थ स्वामी परमार्थ निदानम्।
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान्-रहस्य तती परमगती।।

गुरुर् ब्रह्मा गुरुर् विष्णु: गुरु: साक्षात महेश्वर:।
गुरुर् एव जगत् सर्व तस्मै श्रीगुरवे नम:।।

स पिता स च मे माता स बन्धु स च देवता।
संसार-प्रतिबोधार्थ तस्मै श्रीगुरवे नम:।।

यत सत्येन ज[illegible] सत्यं यत् प्रका[illegible]
यद आनन्देन वोदेति [illegible]

ज्ञानी कर्मी तथा योगी गुरुर् ज्ञेय: सुख-प्रद:।
त्रिभि: हीनं त्यजेत् दूरे मिथ्या-ज्ञान-प्रदर्शकम् ।।

यस्य स्मरण-मात्रेण ज्ञानं उत्पद्यते स्वयम्।
ज्ञान-शेवधि-दात्रे वै तस्मै श्रीगुरवे नम:।।

गायत्री :-

ॐ रूपभवान्यै विद्महे,
द्यदमर विहार देव्यै धीमहि,
तन्न: शक्ति: प्रचोदयात् (**3** बार)

ॐ श्री रूपभवानी माता शारिका अश रूपायै स्वाहा (**1**)

ॐ प्रसिद्ध-विख्यात पितृ श्री माधवजू धर
आत्मजायै स्वाहा

ॐ तदरूप रूपायै स्वाहा

परिजनायै

स्वाहा

ॐ प्रद्युम्नपीठ प्रियायै स्वाहा

ॐ अभ्यास प्रियायै स्वाहा

ॐ ज्ञान प्रदायै स्वाहा

ॐ योगिनी चित्तानन्दायै स्वाहा

ॐ माता चक्रेश्वर्यै स्वाहा (10)

ॐ अन्तरात्म ज्ञानदायै स्वाहा

ॐ शिवानन्द स्वरूपायै स्वाहा

ॐ चैतन्यमात्मायै स्वाहा

ॐ जागृत, स्वप्न, सुषुप्त अवस्थायै स्वाहा

...विद्यायै स्वाहा

ॐ कंदक्षीर नैवेद्य प्रियायै स्वाहा

ॐ पञ्चसिद्ध पीठायै स्वाहा (40)

ॐ इष्ट देव्यै स्वाहा

ॐ भुक्ति-मुक्ति प्रदात्र्यै स्वाहा

ॐ सगुण साकार शारिका रूपायै स्वाहा

ॐ शुभफल प्रदायै स्वाहा

ॐ त्रिकमत प्रियायै स्वाहा

ॐ काश्मीर पण्ड़ितजन प[illegible] [illegible]वाहा

[illegible]

ॐ विकसितमुख[illegible]

ॐ माघकृष्ण सप्तम्यां निर्वाण तिथ्यै [illegible]

ॐ निर्गुण निराकारायै स्वाहा (50)

ॐ धर जाति कन्यायै स्वाहा

ॐ 'नियाज़' प्रणामी स्वीकृत्यै स्वाहा

ॐ सर्वानन्द प्रदात्र्यै स्वाहा

ॐ ज्ञानकर्म-योगीश्वर्यै स्वाहा

ॐ गुरु-शिष्य मूर्तये स्वाहा

ॐ मनिगाम स्वाश्रमायै स्वाहा

ॐ सिंधु नदीतीरे चिनार वृक्षायै स्वाहा

ॐ मुगल [illegible]

ॐ [illegible]

[illegible] स्नानायै स्वाहा

ॐ वैरी विनाशिन्यै स्वाहा

ॐ काश्मीर शाक्त विमर्शन्यै स्वाहा

ॐ क्रिया शक्त्यै स्वाहा

ॐ रूपभवानी शारदापीठायै स्वाहा (108)

अनेन अष्टोत्तरशत नामावली होमेन /
पुष्पार्चनेन / पाठेन आत्मनो वाङ्मन:
कायोपार्जित पाप निवारणार्थ
श्री माता प्रसाद सिद्धयर्थ
श्री [illegible] देवी प्रीयतां
प्री[illegible]ऽस्तु।

[illegible] रू[illegible] जय [illegible]
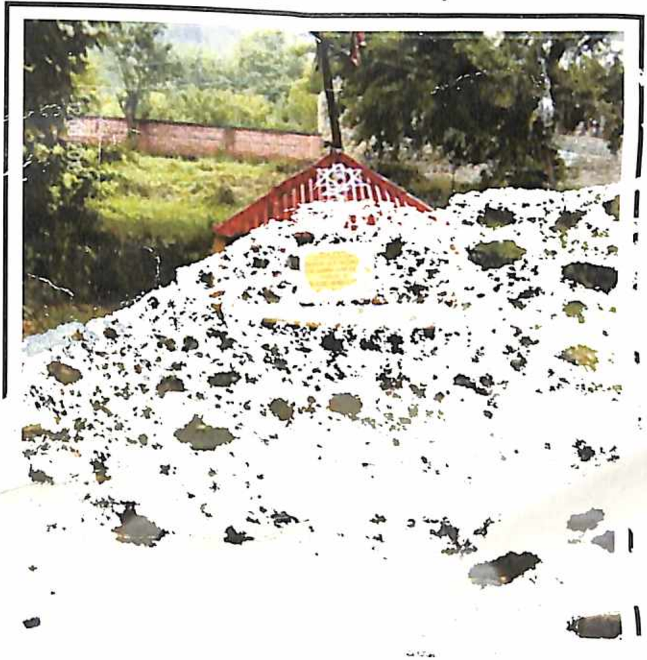
Ancient Paintings of Mata Roop Bhawani